* मुंशी प्रेमचंद *

- जीवनकाल => 31 July 1880 - 8 October 1936
- जन्म मृत्यु स्थल => लमही ग्राम वाराणसी
- मूल नाम => धनपतराय श्रीवास्तव
- उपनाम => • नवाबराय - उर्दू • प्रेमचंद - दयानारायण निगम द्वारा प्रदत्त
- माता पिता => आनंदी देवी - अजायबराम
- उपाधि => • उपन्यास सम्राट - शरतचंद्र द्वारा प्रदत्त
  • कलम का मजदूर - मदनगोपाल
  • कलम का सिपाही - अमृतराय
- स्थापना => • सरस्वती प्रेस - 20 July 1923

- संपादन => • माधुरी
  • जागरण
  • हंस
  • मर्यादा

- उपन्यास => सेवा सदन (1918), वरदान (1921), प्रेमाश्रय (1922), रंगभूमि (1924-25), कायाकल्प (1926), निर्मला (1927), गबन (1931), कर्मभूमि (1932), गोदान (1935), देवस्थान रहस्य (1903-04), प्रतिज्ञा (1929), रूठीरानी (1907), मंगल सूत्र (1948)

रचनाकालक्रम सूत्र => देव के रूठने पर सेवा दान पर प्रेम का ऐसा रंग चढ़ा की काया निर्मल हो गई और उसने प्रतिज्ञा कर गबन का कर्म छोड़कर गोदान किया जिससे उसका अधूरा मंगल हुआ।

- देवस्थान रहस्य => 1903-04 में 'असरारे मआबिद' नाम से उर्दू में रचित। प्रेमचंद का प्रथम उपन्यास। 1905 में हिंदी रूपांतरण देवस्थान रहस्यनाम से किया गया। मंदिरों और तीर्थ स्थानों में फैले भ्रष्टाचार, पाखण्ड की आलोचना।

- रूठी रानी => 1907 ई. में प्रकाशित ऐतिहासिक उपन्यास।

Camlin

• सेवासदन ⇒ 1918 ई. । प्रथम मौलिक एवं हिंदी में प्रथम प्रौढ़ उपन्यास । उर्दू में 'बाजारे हुस्न' नाम से 1917 में प्रकाशित । प्रेमचंद- "सेवासदन हिन्दी का बेहतरीन नावेल है।" इस उपन्यास में विवाह से जुड़ी समस्याओं यथा- तिलक दहेज की प्रथा, कुलीनता का प्रश्न, विवाह के बाद घर में पत्नी का स्थान और समाज में वेश्याओं की स्थिति का चित्रण । प्रमुख पात्र - सुमन, गजाधर, कृष्णचन्द्र, पद्मसिंह, शांता, उमानाथ, चिमनलाल बलभद्रदास, विट्ठलदास एवं जाह्नवी ।

• वरदान ⇒ 1921 ई. । 1912 ई. में मूलतः उर्दू में 'जलवाए ईसार' नाम से प्रकाशित ।

• प्रेमाश्रम ⇒ 1922 ई. । उर्दू में 'गोशाए आफियत' नाम से प्रकाशित । हिंदी का प्रथम राजनीतिक उपन्यास लेकिन पूर्णतः नहीं । किसान आंदोलन का चित्रण । पहली बार कृषकजीवन की समस्याओं का गहनता से चित्रण । गाँधीवाद एवं बॉल्शेविक क्रांति का प्रभाव । प्रेम के माध्यम से हृदय परिवर्तन कर रामराज्य की स्थापना मुख्य ध्येय । प्रमुख पात्र- प्रभाशंकर, प्रेमशंकर, मनोहर, बलराज, ज्वालासिंह, कादिर मियाँ, रायकमलानंद, ज्ञानशंकर, दयाशंकर, सुक्खू चौधरी, गायत्री, विद्या, बिलासी, श्रद्धा एवं शीलमणि ।

• रंगभूमि ⇒ 1924-25 । उर्दू में 'चौगाने हस्ती' नाम से प्रकाशित । पूर्णतः राजनीतिक उपन्यास । औद्योगिकीकरण के दोष एवं ग्रामीण जीवन पर उसके प्रभाव, पूँजीपतियों की शोषण नीति, अंग्रेजों के अत्याचार, भारतीय शिक्षित वर्ग की चरित्रहीनता, गाँधीवाद एवं राष्ट्रप्रेम का चित्रण । प्रमुख पात्र- सूरदास, विनय, सोफिया, जॉनसेवक भरतसिंह, महेन्द्रकुमार, सुभागी, इन्दु, जाह्नवी, मिठुआ, ताहिरअली, क्लार्क आदि ।

• कायाकल्प ⇒ 1926 ई. । मूलतः हिन्दी में लिखा गया प्रथम उपन्यास । अलौकिक एवं अतिरंजनापूर्वक प्रसंगों यथा- ढोंगी बाबाओं का चमत्कार, पूर्वजन्म की स्मृतियों, वृद्धा को तरुणी में बदलना, प्रेमी युगल का नक्षत्र लोक की सैर सपाटा, योग संबंधी कल्पनाओं एवं सांप्रदायिक समस्या का अंकन ।

• निर्मला ⇒ 1927 ई. । दहेज प्रथा एवं अनमेल विवाह से होने वाले पारिवारिक बिखराव एवं विनाश का चित्रण । T.V. धारावाहिक प्रसारित ।

• प्रतिज्ञा => 1929 ई.। 1906 ई. में रचित उर्दू उपन्यास हमखुर्मा व हमसवाब का हिंदी रूपांतर 1907 में प्रेमा अर्थात दो सखियों का विवाह नाम से किया। 1929 ई. में प्रेमा को ही संशोधित कर 'प्रतिज्ञा' नाम से प्रकाशित करवाया। हिंदुओं में विधवा विवाह की समस्या का अंकन।

• गबन => 1931 ई.। 1909 ई. में उर्दू में 'क्रिशना' नाम से प्रकाशित। मध्यमवर्गीय जीवन की असंगति का यथार्थ मनोवैज्ञानिक चित्रण। प्रमुख पात्र - रमानाथ, जालपा, रतन, जोहरा।

• कर्मभूमि => 1933 ई.। हिंदू-मुस्लिम एकता, अछूतोद्धार एवं दलित किसानों के उत्थान की कथा। महाकाव्यात्मक उपन्यास जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का अंकन। प्रमुख पात्र - अमरकांत, समरकांत, सुखदा, मैना, शांतिकुमार, सकीना।

• गोदान => 1935 ई.। अंतिम प्रकाशित उपन्यास। किसान जीवन की महागाथा एवं ऋण की समस्या का अंकन। ग्रामीण जीवन का इतना सच्चा, व्यापक और प्रभावशाली चित्रण हिंदी के किसी अन्य उपन्यास में नहीं मिलता। डॉ. नगेन्द्र - "ग्रामीण जीवन और संस्कृति का महाकाव्य।" प्रमुख पात्र - होरी, धनिया, गोबर, झुनिया, भोला, रायसाहब, मेहता, मालती, खन्ना, दातादीन, गोविन्दी, सिलिया, अमरकांत।

• मंगलसूत्र => 1948 ई.। अधूरा उपन्यास अमृतराय द्वारा पूर्ण।

• कहानी =>
• प्रेमचंद की प्रथम उर्दू कहानी - इश्के दुनिया और हुब्बे वतन
• प्रेमचंद के अनुसार उनकी प्रथम कहानी - संसार का अनमोल रत्न (जमाना, 1907)
• प्रेमचंद का प्रथम उर्दू कहानी संग्रह - सोजे वतन (जून 1908)
• प्रेमचंद का प्रथम हिंदी कहानी संग्रह - सप्त सरोज (1917, 7 कहानियों का संग्रह)
• नगेंद्र के अनुसार हिंदी की पहली कहानी - सौत (1915)
• गणपतिचंद्र गुप्त के अनुसार हिंदी की पहली कहानी - पंच परमेश्वर (1916)
• कमल किशोर गोयनका के अनुसार हिंदी की पहली कहानी - परीक्षा (अक्टूबर 1914 में प्रताप में)
• कमल किशोर गोयनका के अनुसार अंतिम कहानी - क्रिकेट (जमाना, जुलाई 1937)
• नगेंद्र के अनुसार अंतिम कहानी - कफ़न (उर्दू पत्रिका जामिया में दिस. 1935 तथा 1936 अप्रैल में चाँद में प्रकाशित)
• प्रेमचंद नाम से पहली कहानी - बड़े घर की बेटी (जमाना, दिसंबर 1910 ई.)

Camlin

* कहानी संग्रह ⇒ सप्त सरोज (1917), नवनिधि (1919), प्रेम पूर्णिमा (1918), प्रेम पचीसी (1923), प्रेम प्रसून (1924), प्रेम द्वादशी (1924), प्रेम प्रतिमा (1924), प्रेम प्रतिज्ञा (1929), प्रेम चतुर्थी (1929), प्रेम कुंज (1930), सप्त सुमन (1930), कफन (1936), मानसरोवर

* प्रमुख कहानियाँ ⇒ दुनिया का अनमोल रतन (1907), बड़े घर की बेटी (1910), नमक का दारोगा (1913), सज्जनता का दण्ड (1912), पंच परमेश्वर (1916), ईश्वरीय न्याय (1917), दुर्गा का मंदिर (1918), बूढ़ी काकी (1920), शांति (1921), सवा सेर गेहूँ (1924), शतरंज के खिलाड़ी (1924), मुक्तिमार्ग (1924), मुक्तिधन (1924), सौभाग्य के कोड़े (1924), दो सखियाँ (1928), अलग्योझा (1929), पूस की रात (1930), समर यात्रा (1930), पत्नी से पति (1930), सद्गति (1930), दो बैलों की कथा (1931), होली का उपहार (1931), ठाकुर का कुआँ (1932), ईदगाह (1933), नशा (1934), बड़े भाई साहब (1934), कफन (1936)

• नाटक ⇒ संग्राम (1923), कर्बला (1924), प्रेम की वेदी (1933)

• चित्रपट कथा (फिल्म उपन्यास) ⇒ फिल्म मजदूर (1933)

• निबंध ⇒ • कुछ विचार
• प्रेमचंद : विविध प्रसंग - अमृतराय द्वारा संपादित

* प्रमुख निबंध ⇒ साहित्य का उद्देश्य, जीवन में साहित्य का स्थान, कहानी कला, स्वराज के फायदे हिंदी-उर्दू की एकता, उपन्यास

• आत्मकथात्मक लेख ⇒ • जीवन सार • मेरा जीवन (1932)

• जीवनी ⇒ • प्रेमचंद घर में (1944) - शिवरानी देवी
• कलम का मजदूर (1962) - मदन गोपाल
• कलम का सिपाही (1968) - अमृतराय
• प्रेमचंद विश्वकोश (1981) - कमल किशोर गोयनका
• कलम का बादशाह : प्रेमचंद - रामलाल सिंह

Camlin

- **साक्षात्कार**:
  - प्रेमचंद के साथ दो दिन (जन. 1932 विशाल भारत) - बनारसीदास चतुर्वेदी
  - उषादेवी मित्रा का साक्षात्कार (1933) - प्रेमचंद द्वारा पत्राचार से लिया गया

- **पत्र साहित्य**:
  - प्रेमचंद पत्रों में (2005) - रमाशंकर द्विवेदी

- **आलोचना ग्रंथ**:
  - प्रेमचंद (1930) - नंददुलारे वाजपेयी
  - प्रेमचंद: एक विवेचन - इंद्रनाथ मदान
  - प्रेमचंद चिंतन और कला - इंद्रनाथ मदान
  - प्रेमचंद का जीवन (1984) - कमल किशोर गोयनका
  - प्रेमचंद अध्ययन की नई दिशाएँ - कमल किशोर गोयनका
  - प्रेमचंद वाद प्रतिवाद और संवाद - कमल किशोर गोयनका
  - प्रेमचंद (1941) - रामविलास शर्मा
  - प्रेमचंद और उनका युग (1952) - रामविलास शर्मा
  - प्रेमचंद: विरासत का सवाल (1981) - शिवकुमार मिश्र
  - प्रेमचंद का सौंदर्यशास्त्र (1982) - नंदकिशोर नवल
  - प्रेमचंद का पुनर्मूल्यांकन (1988) - शंभुनाथ
  - प्रेमचंद की नीली आँखें - डॉ. धर्मवीर
  - प्रेमचंद: सामंत का मुंशी - डॉ. धर्मवीर
  - कथाकार प्रेमचंद - रामदरश मिश्र
  - प्रेमचंद: जीवनी और कृतित्व - हंसराज रहबर
  - प्रेमचंद आज के संदर्भ में - गंगाप्रसाद विमल
  - शांति का योद्धा: प्रेमचंद - अमृतराय
  - प्रेमचंद के फटे जूते - हरिशंकर परसाई
  - प्रेमचंद और उनका साहित्य - मन्मथनाथ गुप्त
  - एक साहित्यकार का आत्मसंघर्ष - विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
  - प्रेमचंद युगीन संचेतना - विनय मोहन शर्मा
  - प्रेमचंद और उनकी साहित्य साधना - पद्मसिंह शर्मा कमलेश
  - प्रेमचंद के साहित्यिक सिद्धांत - नरेन्द्र कोहली

Camlin

• कथन :-

• प्रेमचंद :- कहानी वह ध्रुपद की तान है, जिसमें गायक महफिल शुरु होते ही अपनी संपूर्ण प्रतिभा दिखा देता है। एक क्षण में चित्त को इतने माधुर्य से परिपूरित कर देता है जितना रात भर गाना सुनने से भी नहीं हो सकता।

• प्रेमचंद :- उपन्यास घटनाओं, पात्रों और चरित्रों का समूह है; आख्यिका केवल एक घटना... अन्य बातें सब उसी घटना के अंतर्गत होती हैं।

• प्रेमचंद :- कोई रचना जो पंद्रह मिनटों में पढ़ी जा सके, गल्प कही जा सकती है।

• प्रेमचंद :- जो वस्तु आनंद नहीं प्रदान कर सकती, वह सुंदर नहीं हो सकती और जो सुंदर नहीं हो सकती, वह सत्य नहीं हो सकती। जहाँ आनंद है, वहीं सत्य है। साहित्य काल्पनिक वस्तु है, पर उसका प्रधान गुण है आनंद प्रदान करना, और इसीलिए वह सत्य है।

• प्रेमचंद :- सबसे उत्तम कहानी वह होती है जिसका आधार मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो।

• प्रेमचंद :- साहित्य की बहुत सी परिभाषाएँ की गई हैं, पर मेरे विचार से उसकी सर्वोत्तम ~~परिभा~~ परिभाषा 'जीवन की आलोचना' है। चाहे वह निबंध के रूप में हो, चाहे कहानियों के या काव्य के, उसे हमारे जीवन की व्याख्या और आलोचना करनी चाहिए।

• प्रेमचंद :- मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ।

• रामविलास शर्मा :- यदि 1918 से 1936 तक का भारतीय इतिहास नष्ट हो जाए तो उसे प्रेमचंद की रचनाओं के आधार पर ज्यादा प्रामाणिक तरीके से लिखा जा सकता है।

• हजारीप्रसाद द्विवेदी :- अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-विचार, रहन-सहन, भाषा-भाव, आशा-आकांक्षा, सुख-दुःख और सूझ-बूझ को जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता। प्रेमचंद शताब्दियों से पददलित, अपमानित और उपेक्षित कृषकों की आवाज थे।

• द्वारिका प्रसाद सक्सेना :- प्रेमचंद की कहानी में गाँव से लेकर आप लेखक प्रेमचंद का हाथ पकड़कर मेड़ो पर गाते हुए किसान को, अंतःपुर में मानकूर परामर्श में लीन गोंयदों को, ईर्ष्या परायण प्रोफेसरों को, दुर्बल हृदय बेकारों को, साहस परायण चमारिन को, ढोंगी पंडितों को, फरेबी पटवारी को, नीचाशय अमीर को देख सकते हैं और निश्चिंत होकर विश्वास कर सकते हैं कि जो कुछ हमने देखा, वह गलत नहीं है।

Camlin